जैनम् श्री कक्षाएँ

पंचवर्षीय पाठ्यक्रम

जैन पाठशाला शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए स्वाध्याय पाठ, स्तोत्र पाठ, स्तुति-भावना पाठ, भजन पाठ, कथा पाठ, चिन्तन पाठ, संस्मरण पाठ का विशेष संग्रह

परस्पर - सहयोग

:: प्रकाशक ::
प्रज्ञा शोध संस्थान, इंदौर (म.प्र.)

पाठशाला संचालन हेतु

१. पंचवर्षीय पाठ्यक्रम कक्षा ४ से कक्षा ८ तक के विद्यार्थियों की मुख्यता से संयोजित किया गया है।

२. दो माह में एक पाठ्यक्रम पढ़ाने पर एक वर्ष में छह पाठ्यक्रम पूर्ण किए जा सकते हैं। इस प्रकार पाँच साल में ३० पाठ्यक्रमों का अध्ययन कराया जा सकता है।

३. प्रत्येक पाठ्यक्रम की फोटोकॉपी करवाकर अथवा वेबसाईट-विद्यासागर पाठशाला डॉट काम से प्रिन्ट आऊट निकलवा कर फाईल में लगाकर विद्यार्थियों को देंवें। प्रश्न संग्रह पुस्तक के प्रश्न व उत्तर कापियों में लिखवाया जाए तो और श्रेष्ठ होगा ।

४. प्रत्येक पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर उसकी परीक्षा लेकर अगले पाठ्यक्रम की पढ़ाई करवाएँ।

५. पाठ्यक्रम पढ़ाते समय परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों को विशेष रूप तैयार कराएँ। सभी प्रश्नों की परीक्षा में अनिवार्यता न रखें। सबसे पहले ज्ञानोपयोग के भेद-प्रभेद याद करवाएँ।

६. कक्षा ४ से नीचे के विद्यार्थियों को परिशिष्ट से भेद-प्रभेद, कहानियाँ, संस्मरण, जैन नारे, कुछ दोहे इत्यादि विषयों को लेकर स्वयं पाठ्यक्रम तैयार कर पढ़ाया जा सकता है।

७. छोटे-बच्चों को कॉपी में लिखवाकर, मुख से बुलवाकर विषयों को तैयार करवाएँ। एक-एक शब्द को जैसे अरिहन्त, इन्द्रिय, इत्यादि को १०-१० बार लिखने के लिए कहें। बच्चों को स्लेट-कलम अथवा कॉपी अवश्य देवें।

८. पहले स्तोत्र-पाठ का शुद्ध उच्चारण सिखाएँ, याद करवाएँ उसके बाद में अर्थ का भी ज्ञान कराएँ।

विद्यार्थियों में आकर्षण हेतु

१. संकल्प पत्र भरवाएँ।

२. बैग-पुस्तक प्रदान करें।

३. पंद्रह दिन में एक दिन बालसभा का आयोजन रखें।

४. प्रति रविवार बच्चों द्वारा सामूहिक पूजन का आयोजन रखें।

५. पूजन में ब्राह्मी, सुन्दरी, भरत, बाहुबली प्रमुख पात्र का चयन करें।
पूजन के पश्चात् किसी एक परिवार की ओर से प्रभावना यात्रा (स्वल्पाहार) का कार्यक्रम रखा जाये।

६. साल में एक बार तीर्थ -यात्रा की संयोजना करें ।

७. छह माह में विशेष परीक्षा का आयोजन कर बच्चों को पाठशाला से प्रमाण-पत्र, पुरस्कार देकर सम्मानित करें।

८. अर्थ व्यवस्था हेतु १००० रु. प्रतिवर्ष के वार्षिक सदस्य बनाएँ।

९. साल में एक बार ज्ञान कलश की स्थापना कराएँ।

१०. पाठशाला-शिक्षिकाओं का वस्त्रादि से सम्मान करें।

११. छोटे-छोटे प्रश्न बनाकर प्रश्नोत्तर शैली में पढ़ाएँ। छोटे बच्चों को मुखाग्र कराएँ। बड़े बच्चों को लिखाएँ अथवा पुस्तक भी दे सकते हैं।

विशेष :-

१. विषय ज्यादा नहीं किन्तु ज्यादा बार पढ़ाएँ ।

२. सामान्य ज्ञान की बातें बताएँ।

३. सूक्तियाँ, मुक्तक, हाईकू आदि भी याद कराएँ।

४. बच्चों को समझ में आया कि नहीं पूछें।

५. बच्चों को भी शिक्षक बन पढ़ाने का मौका दें।

९. बच्चों को हिन्दी की गिनती भी सिखावें

६. स्तोत्र पाठ आदि का विग्रह कर धीरे-धीरे उच्चारण करवाएँ। जैसे दर् शनं देव देवस्य ..... इत्यादि।

७. सभी बच्चों को पढ़ने का मौका मिले कहानी, संस्मरण आदि उनसे पढ़वाएँ।

८. दुकान में बहुत सारा सामान होने पर भी ग्राहक की योग्यता को देखकर जैसे दुकानदार माल बेचता है उसी प्रकार शिक्षक भी इस पुस्तक का आधार लेकर विद्यार्थियों की योग्यता देखकर ही बच्चों को पढ़ाएँ, सिखाएँ।

:: अनुक्रमणिका ::

स्वाध्याय-पाठ

१.	अष्ट द्रव्य से पूजनीय- हमारे नव देवता	१
	जैन श्रावक का प्रथम कर्त्तव्य - देव दर्शन	४
	एक आदर्श बेटी - मैना सुन्दरी	७
२.	सर्व कल्याणकारी महामन्त्र - णमोकार	९
	सृष्टि का सनातन धर्म - जैन धर्म	११
३.	जिन धर्म तीर्थ प्रवर्तक - तीर्थंकर	१७
	जिनवर मुख से निकली वाणी - जिनागम	१९
	जैन कला तीर्थ - देवगढ़	२१
४.	संसार के प्रमुख पात्र - जीव-अजीव	२५
	वर्तमान शासन नायक - भगवान महावीर	२८
५.	जीवों की अवस्था विशेष - गतियाँ	३३
	गृहस्थ के योग्य - षट्कर्म	३४
	तीर्थंकर बनाने वाली भावना - सोलह कारण	३६
	प्रतिदिन करने योग्य - षट् आवश्यक	३७
६.	दुःख के पाँच साधन - पाप	४१
	प्रथम तीर्थंकर - ऋषभदेव भगवान (आदिनाथ)	४४
	हमारे परम आराध्य - देव-गुरु-शास्त्र	४५
७.	पदार्थों को जानने के साधन - इन्द्रियाँ	४९
	घोर उपसर्ग विजयी - भगवान पार्श्वनाथ	५१
	मोक्ष की ओर ले जाने वाला मार्ग- रत्नत्रय	५२
८.	जैन कर्म सिद्धान्त - एक परिचय	५७
	सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य	६०
९.	निर्भय बनाने वाली भावना - बारह अनुप्रेक्षा	६५
	जैन विद्वान परिचय	६७
१०.	सृष्टि का उत्थान-पतनः काल परिवर्तन	७३
	जैनाचार- रात्रि भोजन त्याग एवं जल गालन	७६
	हमारे पथ प्रदर्शक- आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी	७८
११.	विश्व संरचना के प्रमुख घटक- द्रव्य	८१
	जीवों की भावनात्मक परिणति- छह लेश्या	८३
	तीन लोक का वर्णन करने वाला महाग्रन्थ - तिलोयपण्णत्ति	८४

:: अनुक्रमणिका ::

स्वाध्याय-पाठ

	जैन पर्व और त्योहार	८५
१२.	संसार परिभ्रमण का मूल कारण – कषाय	८९
	जैन तत्त्व विवेचन	९०
	चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी	९१
१३.	जैन विश्व संरचना – लोक-अलोक	९७
	महाकवि आचार्य ज्ञान सागर जी	९९
	महापुण्यशाली तिरेसठ महापुरुष	१०१
१४.	जैन जीव विज्ञान – नारकी जीव	१०५
	जैन जीव विज्ञान – तिर्यंच जीव	१०६
१५.	जैन जीव विज्ञान – मनुष्य जीव	११३
	जैन जीव विज्ञान – देव जीव	११४
	जैन इतिहास – भगवान महावीर की परम्परा	११५
१६.	मानवीय शुद्ध आहार – शाकाहार	१२१
	जैन दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त ग्रन्थ – षट्खण्डागम	१२२
	संसार अथवा मुक्ति का कारण – ध्यान	१२४
१७.	श्रावक के विकास का क्रम – प्रतिमा विज्ञान	१२९
	संसार दुःख का मूल कारण – मिथ्यात्व	१३४
१८.	श्रावक का प्रथम आवश्यक – जिन पूजा	१३७
	रामायण का सच्चा स्वरूप – जैन रामकथा	१४०
१९.	श्रमणों की चमत्कारी शक्तियाँ– ६४ ऋद्धियाँ	१४५
	श्रावकों के बारह व्रत	१४८
२०.	१४८ कर्म प्रकृतियाँ और उनका फल	१५३
	आत्मिक उन्नति के सोपान – दस धर्म	१५७
२१.	साधु परमेष्ठी की चर्या – २८ मूलगुण	१६१
	आयु कर्म एवं उसकी बंध प्रक्रिया	१६३
२२.	मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी– सम्यग्दर्शन	१६९
	कर्मों की अवस्थाएँ – दस करण	१७१
२३.	सच्चे सुख का एक मात्र साधन – सम्यग्ज्ञान	१७७
	कर्म क्षय का महत्त्वपूर्ण साधन – १२ तप	१७९
२४.	आचरण की ओर बढ़ते कदम – सम्यक्चारित्र	१८५

:: अनुक्रमणिका ::

स्वाध्याय-पाठ

	जैन जीव विज्ञान- शरीर, प्राण एवं जन्म	१८६
	जैन अमर शहीद - मोतीचन्द शाह	१८८
२५.	जीव के परिणाम - गुणस्थान परिचय	१९३
	अद्वितीय रचना - सिरिभूवलय ग्रन्थ	१९५
	श्रेष्ठ आध्यात्मिक ग्रन्थ - श्री समयसार	१९६
	आत्मा का स्वरूप - नय विवक्षा से	१९७
२६.	वस्तु के स्वरूप को जानने के उपाय- प्रमाण, नय एवं उपनय	२०१
	वस्तु स्वरूप की कथन पद्धति - सप्तभंगी	२०३
२७.	जैन परमाणु विज्ञान - अणु एवं स्कंध	२०९
	जैनत्व की गौरव गाथा- जैन तीर्थ क्षेत्र	२१२
२८.	जैन ज्योतिर्लोक - सूर्य, चन्द्रमा आदि	२१७
	मरण को अमर बनाने की कला - सल्लेखना	२१९
	जैन दानवीर श्रावक - भामाशाह	२२१
	दिगम्बर जैन मुनि की चर्या का प्रतिपादक ग्रन्थ- मूलाचार	२२३
२९.	जैन आहार विज्ञान- भक्ष्याभक्ष्य विवेक	२२५
	कर्म निर्जरा का साधन - परीषह जय	२२७
	श्री प्रश्नोत्तर रत्नमालिका	२२९
३०.	पंच परमेष्ठी के मूलगुण	२३३
	एक अद्भुत प्रक्रिया- समुद्घात	२३५
	श्री प्रश्नोत्तर रत्नमालिका	२३६

- मूर्ख मनुष्य भय से पहले ही डर जाता है, कायर भय के समय ही डरता है और साहसी भय के बाद डरता है।
- अच्छा काम करने के लिये धन की कम, अच्छे हृदय और दृढ़ संकल्प की अधिक आवश्यकता पड़ती है।
- जो मनुष्य एक पाठशाला खोलता है, वह संसार का एक जेलखाना बंद कर देता है।
- बड़ों के प्रति नम्रता कर्त्तव्य, है बराबर वालों के प्रति विनय सूचक है, छोटों के प्रति कुलीनता की द्योतक एवं सबके प्रति सुरक्षा है।
- अभिमान वश देवता, दानव बन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।
- परिश्रम उज्ज्वल भविष्य का पिता है।

:: अनुक्रमणिका ::

स्तोत्र-पाठ (संस्कृत-प्राकृत)

१.	शान्तिनाथ स्तवन	८
२.	विद्यासागर विश्व वंद्य	१४
३.	दर्शन पाठ	१५
४.	श्री पंचमहागुरु भक्ति	२२
५.	वीतराग स्तोत्र	२६
६.	सुप्रभात स्तोत्र	३८
७.	गोम्मटेश थुदि	४६
८.	महावीराष्टक	५३
९.	मंगलाष्टक	६२
१०.	विद्याष्टकम्	६९
११.	श्री सरस्वतीनाम स्तोत्र	७७
१२.	परमानन्द स्तोत्र	८७
१३.	सिरि तिथ्यर भत्ति	९४
१४.	भक्तामर स्तोत्र (1-8)	१०३
१५.	भक्तामर स्तोत्र (9-16)	११०
१६.	भक्तामर स्तोत्र (17-24)	११८
१७.	भक्तामर स्तोत्र (25-32)	१२६
१८.	भक्तामर स्तोत्र (33-40)	१३१
१९.	भक्तामर स्तोत्र (41-48)	१४२
२०.	एकीभाव स्तोत्र (1-6)	१६५
२१.	एकीभाव स्तोत्र (7-10)	१७४
२२.	एकीभाव स्तोत्र (11-18)	१८१
२३.	एकीभाव स्तोत्र (19-25)	१९०
२४.	तत्त्वार्थ सूत्र (1-2)	१८३
२५.	तत्त्वार्थ सूत्र (3-4)	१८९
२६.	तत्त्वार्थ सूत्र (5-6)	२००
२७.	तत्त्वार्थ सूत्र (7-8)	२०५
२८.	तत्त्वार्थ सूत्र (9-10)	२१३
२९.	प्रश्नोत्तर रत्नमालिका (1-15)	२२९
३०.	प्रश्नोत्तर रत्नमालिका (16-26)	२३६
३१.	आचार्य वंदना	२३७

निरोगता की रामबाण औषध - अनशन अर्थात् उपवास रूपी तप करने से विविध प्रकार के रोगों के कष्ट स्वप्न में भी प्राप्त नहीं होते हैं कदाचित् कर्म के वश से कोई रोग आ भी जाए तो तप रूपी योद्धा से शीघ्र पराजित हो जाता है। आचार्य गुरुवर कहते हैं 'एक उपवास में बुखार खिसकने लगता है, दूसरे उपवास में दरवाजा कहाँ है? ढूँढने लगता है। तीसरे उपवास मे चकाचक अर्थात् बुखार समाप्त'। एक कहावत है-

पैर हो गरम, पेट हो नरम, सिर हो ठण्डा।
वैद्य जी घर आएँ तो दिखा दो डण्डा।।

इसलिए लंघन (उपवास) का उल्लंघन मत करो। एक माह में कम से कम दो उपवास करना औषध के समान है। अत: तप से डरने की बजाय दृढ़ संकल्प के साथ व्रत-उपवास धारण करें एवं तन, मन, चेतन सभी को स्वस्थ बनाएँ।

:: अनुक्रमणिका ::

स्तुति-भावना पाठ

१.	नवदेव स्तवन	(१)
२.	मिथ्यातम नाश वे	(२)
३.	अशरीरी सिद्ध भगवान	(६)
४.	शिक्षाप्रद दोहावली	(१६)
५.	अरिहंत-सिद्ध-आचार्य	(१७)
६.	चेतो चेतन	(२०)
७.	राजा राणा छत्रपति	(२१)
८.	नीलकमल के दल सम	(२३)
९.	श्वांस-श्वांस में	(३०)
१०.	सिद्धों की श्रेणी	(३०)
११.	दया करो संकट हरो	(३१)
१२.	जीवन हम आदर्श बनाएँ	(३२)
१३.	इष्ट प्रार्थना (हमारे कष्ट)	(३५)
१४.	अपनी भावना (जिनवर हमारे)	(३५)
१५.	माता तू दया करके	(५०)
१६.	संत साधु बनके	(५६)
१७.	इतनी शक्ति	(५९)
१८.	सुरपति शिर पर	(६१)
१९.	वैराग्य भावना	(६४)
२०.	दिन-रात मेरे स्वामी	(६८)
२१.	नीति अमृत (हाथ देख)	(७१)
२२.	प्रेम भाव हो सब	(७९)
२३.	चौबीस स्तवन 1-12	(९५)
२४.	चौबीस स्तवन 13-24	(१०२)
२५.	प्रभु पतित पावन	(१०८)
२६.	हे भारती माँ	(१०८)
२७.	प्रायश्चित्त पाठ	(१०९)
२८.	विद्यासागर गंगा	(१०९)
२९.	मेरी भावना	(११२)
३०.	आगे-आगे अपनी ही	(१२३)
३१.	तेरी छत्रच्छाया भगवन	(१२७)
३२.	आलोचना पाठ(वंदों पांचों)	(१३३)
३३.	जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र	(१३५)
३४.	छह ढाला 1-2	(१३६)
३५.	भो आचार्य	(१४७)
३६.	छह ढाला 3	(१५०)
३७.	सूर्योदय दोहावली	(१५२)
३८.	मिलता है सच्चा सुख केवल	(१५६)
३९.	छह ढाला 4-5	(158)

:: अनुक्रमणिका ::

स्तुति-भावना पाठ

४०.	मंगल भावना	(१६६)
४१.	छह ढाला 6	(१६७)
४२.	जिनवाणी जग मैया	(१७२)
४३.	वंदूं श्री अरहंत पद	(१७५)
४४.	आध्यात्म दोहावली	(१८०)
४५.	श्री सम्मेदशिखर वंदना	(१९९)
४६.	निर्वाण काण्ड	(२०६)
४७.	सामायिक चर्या	(२०८)
४८.	पार्श्वनाथ स्तवन	(२११)
४९.	इतना तो कर दो स्वामी	(२११)
५०.	हे प्रभु ज्ञान का दान	(२१५)
५१.	पूर्णोदय दोहावली	(२२४)
५२.	हूँ चैतन्य चिदानन्द धाम	(२२८)
५३.	तुम्हें छोड़कर	(२२८)
◆	परीक्षा हेतु विशेष	(२१०)
◆	भोजन मंत्र	(२२६)

आचार्य विद्यासागर गुरु की आरती

गुण रत्नाकर विद्यासागर यह मंगल-दीपक हाथ लिए,
आरती उतारूँ गुरुवर की...।
जन्म-पूर्व सपने में माँ को चारण-मुनि दिखलाए हो ऽ ऽ!
चारण मुनि दिखलाए...
पूर्ण काम बनने को स्वामी! पूनम के दिन आए।
ओ स्वामी! पूनम के दिन आए...।
शिवपथगामी, अन्तर्यामी यह मंगल दीपक हाथ लिए,
आरती उतारूँ गुरुवर की...।।१।।
तरुण अवस्था में पहचाना, क्या मेरा? क्या तेरा? हो ऽ ऽ!
क्या मेरा? क्या तेरा?
समता का जीवन अपनाया तज ममता का डेरा
ओ स्वामी! तज ममता का डेरा।
समताधारी ममताहारी यह मंगल-दीपक हाथ लिए,
आरती उतारूँ गुरुवर की...।।२।।
वस्त्राभूषण छोड़ चुके पर संयम भूषणधारी, हो!
संयम भूषणधारी,
नीरस भोजन लेते तो भी बोल सरस सुखकारी
ओ स्वामी! बोल सरस सुखकारी
रस के त्यागी, मन वैरागी, यह मंगल-दीपक हाथ लिए,
आरती उतारूँ गुरुवर की...।।३।।
इष्ट-वार गुरुवार आपका गुरुवर! कितना प्यारा हो ऽ ऽ!
गुरुवर कितना प्यारा,
गुरु उपकार चुकाने गुरु के गुरु पद को स्वीकारा।
ओ स्वामी! गुरु पद को स्वीकारा।
गुरुओं में गुरु विद्यासागर यह मंगल-दीपक हाथ लिए,
आरती उतारूँ गुरुवर की...।।४।।
कलियुग में सतयुग-सी गुरु की शिष्य मंडली प्यारी हो ऽ ऽ!
शिष्य मंडली प्यारी
निर्मोही गुरुवर पर देखो मोहित जनता सारी!
ओ स्वामी! मोहित जनता सारी
छवि अविकारी लगती न्यारी यह मंगल-दीपक हाथ लिए,
आरती उतारूँ गुरुवर की...।।५।।
गुण रत्नाकर विद्यासागर यह मंगल दीपक हाथ लिए
आरती उतारूँ गुरुवर की।।

:: अनुक्रमणिका ::

भजन पाठ

१.	केशरिया केशरिया	(७)
२.	सारे जहाँ से अच्छा	(७)
३.	णमोकार मय मेरा	(१०)
४.	गुरु ने जहां-जहां	(१३)
५.	चरणों में आ पड़ा हूं	(१३)
६.	अम्मा-अम्मा मुझको	(१६)
७.	कभी तो ये बाबा	(१८)
८.	काया की काठी	(२३)
९.	लक्ष्य न ओझल	(३२)
१०.	उठे सबके कदम	(३५)
११.	मुझे है काम	(४१)
१२.	मीठो-मीठो बोल	(७८)
१३.	श्रद्धा हमारी भाषा	(३५)
१४.	छोटे-छोटे शिष्य हैं	(३७)
१५.	नाम जब से तुम्हारा	(४०)
१६.	आओ बच्चों खेलें खेल	(४९)
१७.	परम दिगम्बर मुनिवर	(५६)
१८.	मुझे ऐसा वर दे दे	(५६)
१९.	मेरे सर रख दो	(५६)
२०.	सब कुछ तो मिल गया	(६१)
२१.	ढोल बजा के बोल	(६६)
२२.	श्री विद्यासागर विनम्र	(८०)
२३.	गुरुदेव दया करके	(८२)
२४.	श्री विद्यासागर जी	(८२)
२५.	करना मन ध्यान महामंत्र	(८४)
२६.	पलकें ही पलकें	(८४)
२७.	अब सौंप दिया	(९०)
२८.	तीर्थ विहारी गुरुराज	(१०६)
२९.	जब कोई नहीं आता	(१०८)
३०.	आशा रहे न	(१०९)
३१.	दीपों की थाल सजाई	(११२)
३२.	माता-पिता और गुरु	(१२५)
३३.	चरणों में नमन हमारा	(१३९)
३४.	उड़ा जा रहा पंछी	(१४३)
३५.	पुनः दर्शन पुनः दर्शन	(१४३)
३६.	धीरे-धीरे चलो जी	(१४९)
३७.	गुरु तू ना मिला	(१६३)
३८.	रोम रोम से निकले	(१६४)
३९.	भगवान तुम्हें मैं	(१८२)

:: अनुक्रमणिका ::

भजन पाठ

४०.	जय बोलो जय बोलो	(१८८)
४१.	हे मेरे गुरुवर	(१९८)
४२.	आसरा इस जहाँ	(१९८)
४३.	जीवन है पानी की बूंद	(२०६)
४४.	हम प्यासे हमको	(२१९)
४५.	जिस भजन में गुरु	(२२०)
४६.	करता रहूं गुणगान	(२२०)
४७.	गुरु की छाया	(२२२)
४८.	बिन तेरे गुरुवर मेरा	(२२४)
४९.	आत्म शक्ति से ओत-प्रोत	(२२४)
५०.	लिखा है लेख	(२३०)
५१.	मेरे अर्हत् पावन	(२३०)
५२.	गुण रत्नाकर आरती	(ज)
५३.	भव सागर में दुःख न मिलता	(त)

संस्कार ज्ञान

जो पाठशाला आयेगा – ज्ञानी वो बन जाएगा ।
बात बड़ों की जो मानेगा – जग में ऊँचा नाम करेगा ।
जिन पूजन अभिषेक करेगा – नहीं किसी से कभी डरेगा ।
दया धर्म जो पालेगा – जैनी वो कहलाएगा ।
आलू जो भी खायेगा – भालू वो बन जाएगा ।
प्याज जो भी खायेगा – बदबू तन में पाएगा ।
रात में जो भी खायेगा – नरक-निगोद में जाएगा ।
जो ज्यादा कुरकुरे खायेगा – सूखा ही रह जाएगा ।
मंदिर जो नित आयेगा – स्वर्ग-मोक्ष पद पाएगा ।
तीर्थ वंदना जो करते हैं – तीर्थंकर का पद धरते हैं ।
दान चार जो देते हैं – सदा सुखी वे रहते हैं ।
जो जिनवाणी पढ़ते हैं – मोक्षमार्ग में बढ़ते हैं ।
गुरु वचन जो सुनते हैं –नहीं तनाव में रहते हैं ।
चोरी जो भी करते हैं – जेलों में ही पड़ते हैं ।
शराब जो भी पीते हैं – रो-रोकर ही जीते हैं ।
माँस जो भी खाते हैं – नरकों में पीटे जाते हैं ।
जुआ जो भी खेलते हैं – भिखारी बनकर जीते हैं ।
सदा सत्य जो बोलेगा – सुख का गेट वो खोलेगा ।
आपस में जो लड़ेगा – कुत्ता बनना पड़ेगा ।
जो अनछना पानी पिएगा – रोगी जीवन जिएगा ।
लिपिस्टिक जो लगाएगा – होंठ वो कटवाएगा ।
चाय जो भी पीता है – नशे में ही जीता है ।
वैयावृत्तिज ोक रतेह ैं– ब ाहुबलीस मव ोब नतेह ैं।
अण्डा जो भी खाता है – मुर्गा बन काटा जाता है ।
नेल पॉलिश जो लगाते हैं – जहर साथ में खाते हैं ।
गाली जो भी बकता है – गूँगा वो ही बनता है ।
मुनि आर्यिका जो बनते हैं – घोर दुःखों से वो बचते हैं ।
जो देखकर खाना खाते हैं – हिंसा से बच जाते हैं ।
परोपकार जो भी करते हैं – महापुरुष वे ही बनते हैं ।
विनय- नम्रता जो धरते हैं – सबके प्रेम-पात्र बनते हैं ।
जो ज्यादा टी.वी. देखेगा – पागल वो बन जायेगा ।
जिद्द जो भी करेगा – गिद्ध पक्षी बनेगा ।
तम्बाकू-गुटखा खाते हैं – कैंसर रोग बुलाते हैं ।
शहद जो भी खाएगा – मधुमक्खी बन जाएगा ।
दिन में जो भी सोएगा – उल्लू वो बन जाएगा ।
जो पेप्सी-कोला पीते हैं – रोगी जीवन जीते हैं ।
झूठ जो भी बोलेगा – तोतला वो बन जाएगा ।
लात जो भी मारेगा – लंगड़ा वो बन जाएगा ।
गुस्सा जो भी करता है – उसका खून जलता है ।
जो ज्यादा टॉफी खाएगा – मोटा वो हो जाएगा ।
जो भी ज्यादा रोएगा – रावण वो कहलाएगा ।
जो सदा सभी से प्रेम रखेगा – भूत भी उससे सदा डरेगा ।
जो आत्मा को जानेगा – परमानन्द वो पाएगा ।
जो भी ध्यान लगाते हैं – भगवान वो बन जाते हैं ।
प्रभु प्रार्थना जो करता है – संकट में भी न डरता है ।
पटाखे जो भी चलाएगा – आग में वो जल जाएगा ।
जो पिज्जा बर्गर खाते हैं – पाप बहुत कमाते हैं ।
हरी घास पर जो चलता है – मच्छर-मक्खी वो बनता है ।

:: अनुक्रमणिका ::

कथा पाठ

१.	उपदेश का प्रभाव	(३)
२.	शिवभूति मुनिराज	(१४)
३.	पश्चात्ताप	(२०)
४.	मुंह से निकले शब्द	(२३)
५.	धरोहर	(२७)
६.	काला अक्षर भैंस बराबर	(२९)
७.	पाप का मूल कारण परिग्रह	(३१)
८.	महासती अत्तिमव्वे	(४०)
९.	करनी का परिणाम	(४३)
१०.	दीपक और तलवार	(४७)
११.	बुद्धि की परीक्षा	(५०)
१२.	भक्ति में शक्ति	(५५)
१३.	विषापहार	(५९)
१४.	सच्चा मित्र कौन	(८०)
१५.	बड़ों की शिक्षा	(९३)
१६.	कुलभूषण-देशभूषण मुनिराज	(१०४)
१७.	ब्रह्म गुलाल मुनि	(१२८)
१८.	विशल्या की कथा	(१३२)
१९.	सुकुमाल मुनि	(१५१)
२०.	रूपवान राजा	(१६०)
२१.	जब जागो तभी सबेरा	(१६४)
२२.	भावना का चमत्कार	(१७३)
२३.	अकृत्य पुण्य	(१७७)
२४.	चंद्रगुप्त मुनि द्वारा गुरु सेवा	(१८४)
२५.	पूजा का फल	(२०४)
२६.	त्याग की महिमा	(२०७)
२७.	तीन लाख की तीन बातें	(२१५)
२८.	परोपकार	(२२०)
२९.	समय का मूल्य	(२२२)
३०.	चार मूर्ख	(२३२)
३१.	दुःख का कारण मेरापन	(२३४)

कहानियाँ मील के पत्थर के समान होती हैं, मील के पत्थर के पास जो रुक जाते हैं वे यात्रा से वंचित हो जाते हैं। कथाएँ मात्र पठन-पाठन की विषय-वस्तु नहीं होती, बल्कि उनमें जो दिशा बोध छिपा होता है वह हमारे चित्त को शक्ति प्रदान कर तदनुरूप करने की प्रेरणा देता है। जो पाठकगण कथा को आचरण के वस्त्र नहीं पहनाते वे अपनी उत्कर्ष यात्रा से वंचित रह जाते हैं।

:: अनुक्रमणिका ::

चिन्तन पाठ

१.	ज्ञान दान सर्व श्रेष्ठ	(६)
२.	संसार परिभ्रमण का कारण	(९)
३.	व्रत उपवास की जरूरत	(१८)
४.	भेद विज्ञान की ज्योति	(२७)
५.	दृढ़ रखें श्रद्धान	(३०)
६.	तत्वाभ्यास की धुन	(४५)
७.	अनुयोग	(५०)
८.	द्रव्यलिंगी व भाव लिंगी	(५४)
९.	इंद्रिय सुख कैसा	(५९)
१०.	अमृत के बदले जहर	(६७)
११.	सुख के भेद	(६८)
१२.	संगति का प्रभाव	(७१)
१३.	संशय विपर्यय	(८२)
१४.	सबके दिन एक से नहीं	(८३)
१५.	कर्म एक थर्मामीटर	(९४)
१६.	आठ प्रकार की मुक्ति	(१११)
१७.	चारों अनुयोग उपयोगी	(११९)
१८.	तत्त्वार्थ सूत्र	(१२३)
१९.	आत्मा में अनंत शक्ति	(१२५)
२०.	निमित्त उपादान	(१३५)
२१.	उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य	(१४५)
२२.	सम्यक् ज्ञान	(१५३)
२३.	तत्त्वार्थ सूत्र एक तिजोरी	(१६९)
२४.	मंगलम् भगवान	(१७४)
२५.	एक कुशल व्यापारी	(१७६)
२६.	आत्मा त्रैकालिक शुद्ध नहीं	(१८०)
२७.	निश्चय नय अवक्तव्य	(१९१)
२८.	इंद्रिय सुख का बहुमान	(१९७)
२९.	हेय-उपादेय तत्व	(१९८)
३०.	लौकिक धन श्रेष्ठ	(२०७)
३१.	आत्मा का बहुमान	(२०८)
३२.	आध्यात्म की अपेक्षा उपयोग	(२१५)
३३.	वीतराग सम्यक्त्व	(२१९)
३४.	आचार्य व ग्रंथ की प्रामाणिकता	(२२१)
३५.	दुःख का कारण मेरापन	(२३४)
३६.	मोह का कार्य	(२३९)

:: अनुक्रमणिका ::

संस्मरण पाठ एवं स्मृतियाँ

१.	महात्मा गांधी पर जैन धर्म का प्रभाव	(२)
२.	भव जल का नीर	(६)
३.	जैन धर्म भारत का प्राचीन धम	(१३)
४.	राजा बाई क्लॉक टॉवर	(२१)
५.	साधन एवं साधना	(३२)
६.	चतुर गुणस्थान	(३७)
७.	रोज परीक्षा	(४०)
८.	बड़ा कौन	(४२)
९.	बात घर कर गई	(६२)
१०.	चित्र की सीख	(६६)
११.	गोखले की निष्ठा	(६८)
१२.	मंत्र की शक्ति	(९५)
१३.	जैन जाति नहीं धर्म है	(१००)
१४.	जैन धर्म और सत्य का रास्ता	(१००)
१५.	विदेशों में जैन साहित्य	(१०२)
१६.	स्वतंत्रता संग्राम में जैन	(१०७)
१७.	धन से किताब	(१०७)
१८.	भारत की प्राचीन भाषा प्राकृत	(१०८)
१९.	दाँत क्यों गिरे	(१११)
२०.	गिरना-उठना	(११७)
२१.	सहना सीखा	(१२३)
२२.	जैन गीता - समणसुत्तं	(१३०)
२३.	विश्वकोशों की परम्परा में अद्वितीय- जैनेन्द्र सिद्धान्त कोष	(१३९)
२४.	रास्ता कहाँ	(१७४)
२५.	आदत ठीक नहीं	(१८५)
२६.	गलत समझ	(१८५)
२७.	तीन सौ की पुस्तक	(१९९)
२८.	भरत चक्रवर्ती और भारत	(१९६)
२९.	मूर्खता का युग गया	(२०४)
३०.	अहिंसा के प्रति रुचि	(२११)
३१.	सर्दी का समय	(२२३)
३२.	व्रती बनने की प्रेरणा	(२३१)
३३.	क्षत्रिय धर्म	(२३१)

यदि आप एक समय पर दो कार्य कर रहें हैं तो इसका अर्थ है आप दोनों ही कार्य नहीं कर रहे हैं। अत: आप जहाँ जो कार्य कर रहें हैं वहीं अपने मन को भी लगाएँ।

- परिशिष्ट -

१. तत्त्वार्थ सूत्र अर्घ, आत्मबोध -१
२. हाँ-हाँ, ना- ना -२
३. संस्कार पाठ -३
४. ज्ञानोपयोग -३
५. दिल न दुखाना -१७
६. मन की तरंगें -१८
७. जादू के थैले -१८
८. मोती की फसल -१८
९. शास्त्र दान का फल -१८
१०. हो सके तो बच्चों को सिखाना-१९
११. स्वर्ग से सुन्दर -२०
१२. दिनचर्या का पाठ -२०
१३. खेल-कूद -२१
१४. धार्मिक नारे -२६
१५. छुक-छुक-छुक -२८
१६. नदिया न पिये कभी -२८
१७. दस धर्मों के डिब्बे -२९
१८. सीखो -२९
१९. मन बेचैन होने के कारण -२९
२०. सहा न क्या-क्या? -३१
२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र -३२
२२. भावना द्वात्रिंशतिका -३४
२३. श्री जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र -३५
२४. इष्टोपदेश -४०
२५. वंदनागीत -४२
२६. द्रव्यसंग्रह -४२
२७. चौबीस तीर्थंकर स्तुति -४५
२८. महावीर की संतान -४५
२९. पारस रे तेरी -४५
३०. एकीभाव पद्यानुवाद -४६
३१. चारित्र चक्रवर्ती -४७
३२. जिनवाणी स्तुति -४७
३३. A for o my -४८
३४. एक कार ऐसी -४९
३५. बिटिया रानी कविता -५०
३६. विद्यार्थी प्रवेश पत्र -५१
३७. जैन प्रतीक चिह्न -५२

भवसागर में दुःख न मिलता

भवसागर में दुःख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
सच कहता हूँ मेरे भगवन्! नहीं प्रेम से आया हूँ।
विपदाओं ने हमको भेजा, व्यथा सुनाने आया हूँ।।
गर्मी जिसको नहीं सताती, वृक्ष के नीचे जाता क्यों?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
भवसागर में .....।।
तुम तो सुख के सागर भगवन्! दो बूँद हमें मिल जाएगी।
जाने वाली अंतिम श्वासें, कुछ पल को रुक जाएँगी?
नदियों में यदि जल न होता , हंस बैठने आता क्यों?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
भवसागर में .....।।
जो कुछ तुमको सुना रहा हूँ, वह मेरी मजबूरी है।
जो कुछ करना चाहो भगवन्! करना बहुत जरूरी है।
दूध यदि माँ नहीं पिलाए, बच्चा रुदन मचाता क्यों?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
भवसागर में .....।।
भीख नहीं मैं मांग रहा हूँ, नाहीं कोई भिखारी हूँ।
स्वामी सेवक को देता है, मैं तो भक्त पुजारी हूँ।।
जितना नीर लुटाता बादल, उतना ऊपर जाता क्यों?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
भवसागर में दुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
शरण में आकर सुख न मिलता, तेरी शरण में आता क्यों?
भवसागर में .....।।